सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

पाठ्यक्रम–कार्य

(विद्यावारिधि उपाधि हेतु पंजीकृत छात्रों के लिए)

नियमावली

उक्त पाठ्यक्रम विद्यावारिधि का अंगभूत होगा। पाठ्यक्रम की अवधि छः माह (एक सेमेस्टर 90 कार्य दिवस)की होगी। विश्वविद्यालय के विद्यावारिधि अध्यादेश एवं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के विनिमय के अनुसार प्रत्येक शोध छात्र को एक सेमेस्टर का यह पाठ्यक्रम सफलतापूर्व सम्पन्न करना आवश्यक होगा। इसके पश्चात् ही शोध प्रबन्ध लेखन की अनुमति दी जायेगी।

उद्देश्य–

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी में पंजीकृत शोध छात्रों को शोध प्रविधि, संगणक, (कम्प्यूटर) एवं स्व–विषय से सम्बन्धित शोध प्रकाशन समीक्षा का ज्ञान कराना।

प्रवेश –पात्रता

विश्वविद्यालय में विद्यावारिधि का (पी0एच0डी0) उपाधि हेतु पंजीकृत समस्त शोध छात्र।

शुल्क

विश्वविद्यालय द्वारा समय–समय पर निर्धारित प्रवेश शुल्क, शिक्षण एवं परीक्षा शुल्क देय होगा।

संचालन–

पाठ्यक्रम का संचालन विश्वविद्यालय के अनुसन्धान निदेशक के तत्वाधान में अनुसन्धान द्वारा होगा।

उपस्थिति–

इस पाठ्यक्रम में 75 % उपस्थिति अनिवार्य है, नियमानुसार 25 % की छूट कुलपति महोदय की अनुमति पर देय होगा।

परीक्षा का नियम–

1– इस पाठ्यक्रम में तीन प्रश्न पत्र होंगे। प्रत्येक प्रश्न पत्र 100–100 अंकों के होंगे। द्वितीय प्रश्नपत्र (संगणक) में सैद्वान्तिक 60 अंक का एवं प्रायोगिक 40 अंक की होगी।

2– शिक्षा एवं परीक्षा का माध्यम संस्कृत/ हिन्दी/ अंग्रेजी होगा।

उत्तीर्णताक्रम निर्देश–

1– इस पाठ्यक्रम की परीक्षा को उत्तीर्ण करने के लिये 50 % अंक प्राप्त करना अनिवार्य है।

2– शोध प्रकाशन समीक्षा पत्र (तृतीय पत्र) के अन्तर्गत लघुशोध निबन्ध का परीक्षण सम्बन्धित विभाग में होगा। विभागद्वारा परीक्षणोपरान्त अंक अनुसन्धान संस्थान को उपलब्ध कराये जायेंगे। लघु शोध–प्रबन्ध (डिजर्टेशन) की भाषा वही होगा जो शोध प्रबन्ध के लिए निर्धारित है। लघु शोध प्रबन्ध विभाग में जमा होने के पश्चात् उसकी एक प्रति अनुसन्धान संस्थान को तत्काल प्रेषित करनी होगी।

प्रथम – प्रश्नपत्र

1– अनुसन्धान पद्धति।

1. अनुसन्धान का स्वरूप एवं सीमा

क. अनुसन्धान शब्द की अवधारणा

(अ) परम्परागत अथवा प्राचीन दृष्टि– **भाष्य (चूर्णि) व्याख्या, टीका, टिप्पणी, अध्ययन, बोध (स्वाध्याय), आचरण (प्रवचन), प्रचारण (व्यवहार)।**

(ब) आधुनिक दृष्टि– **अन्वेषण, शोध, गवेषणा, परिशीलन, अनुसन्धान, अनुसन्धान कला।**

2– संस्कृत वाङ्मय में अनुसन्धान

(क) वैदिक लौकिक दर्शन के क्षेत्र में।

(ख) मातृका सम्पादन, पाठ समीक्षात्मक सम्पादन के क्षेत्र में।

(ग) नित्य नूतन हो रहे अनुसन्धान के क्षेत्र में।

2– **अनुसन्धान के प्रकार, विषय चयन एवं संक्षिप्तिका–**

(क) भेद

1– विमर्शात्मक शोध

2– विश्लेषणात्मक शोध

3– तुलनात्मक शोध (अन्तर्विषयी)

4– ऐतिहासिक शोध

5– प्रयोगात्मक शोध

(ख) अनुसन्धान विषय के मूल सिद्धान्त

अभिरूचि, योग्यता, विषय प्राधान्य, सामग्री, समुपलब्धि, शीषर्क निर्माण की संकल्पना, शोध प्रबन्ध की रूपरेखा, विमर्शात्मक शोध प्रबन्ध एवं मातृकाकृत शोध प्रबन्ध के प्रस्तावक मूल बिन्दू।

3– सामग्री– संकलन के मूल स्त्रोत

1– प्राथमिक स्त्रोत– मूलग्रन्थ, व्याख्या, पुरातात्विक आधार, शिलालेख शासकीय अभिलेख।

2– आनुषंगिक स्त्रोत– साहित्येतिहास, ग्रन्थ सूची, शोध पत्रिका, कोर्स एवं अन्य लेख।

3– आधुनिक शोध संस्थान– अन्तर्जाल, ई–शोध पत्रिका, ई–कोश।

4– विषय–विशेषज्ञों के व्याख्यानों के द्वारा।

5– ग्रन्थालय आदि स्त्रोत से ।

सामग्री संकलन पद्धति–

प्रश्नावली पद्धति, साक्षात्कार पद्धति, शोध पत्र, चिन्हांक सूची निर्धारण मापन सूची। सर्वेक्षण केस स्टडीज।

4– पाठ समालोचना एवं सम्पादन

1–पाण्डुलिपि सम्पादन प्रक्रिया, पाठ समालोचना

2–पाण्डुलिपि के प्रकार, आधार, प्रमुख लिपियाँ

3– ऐतिहासिक सर्वेक्षण

4– प्रमुख पाण्डुलिपि ग्रन्थालय, प्रमुख सूचीपत्र

5– अध्ययन/ वाचन की पद्धतियाँ परम्परागत एवं आधुनिक –पाठ समलोचनात्मक मूलतत्व।

5– शोध प्रबन्ध निर्माण के मूल सिद्धान्त एवं प्रस्तुति

1– शोधप्रबन्ध का स्वरूप, उद्देश्य, निर्माण क्रम, भाषा, लेखन रीति, पूर्व शोध का सर्वेक्षण।

2– शोध प्रबन्ध का निर्माण, निष्कर्ष शोध सारांशिका।

3– अनुबन्ध सूची– श्लोक सूची, पद सूची, पारिभाषिक पद सूची।

4– ग्रन्थ सूची निर्माण

5– उद्धरण के नियम, पाद टिप्पणी के नियम

6– प्रेस कापी का निर्माण

सन्दर्भ ग्रन्थ –

1– आचार्य सत्यनारायण– संस्कृत शोध प्रविधिः।

2– त्रिपाठी भागीरथ– अनुसन्धान पद्धति– सारस्वती सुषमा, 23 वर्ष 2–3

3– आचार्य नगेन्द्र– अनुसन्धान प्रबन्ध प्रक्रिया– राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली।

4– त्रिपाठी–रूद्रदेव– अन्वेषण विशेषांक, लाल बहादुर शास्त्री केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली।